संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

58

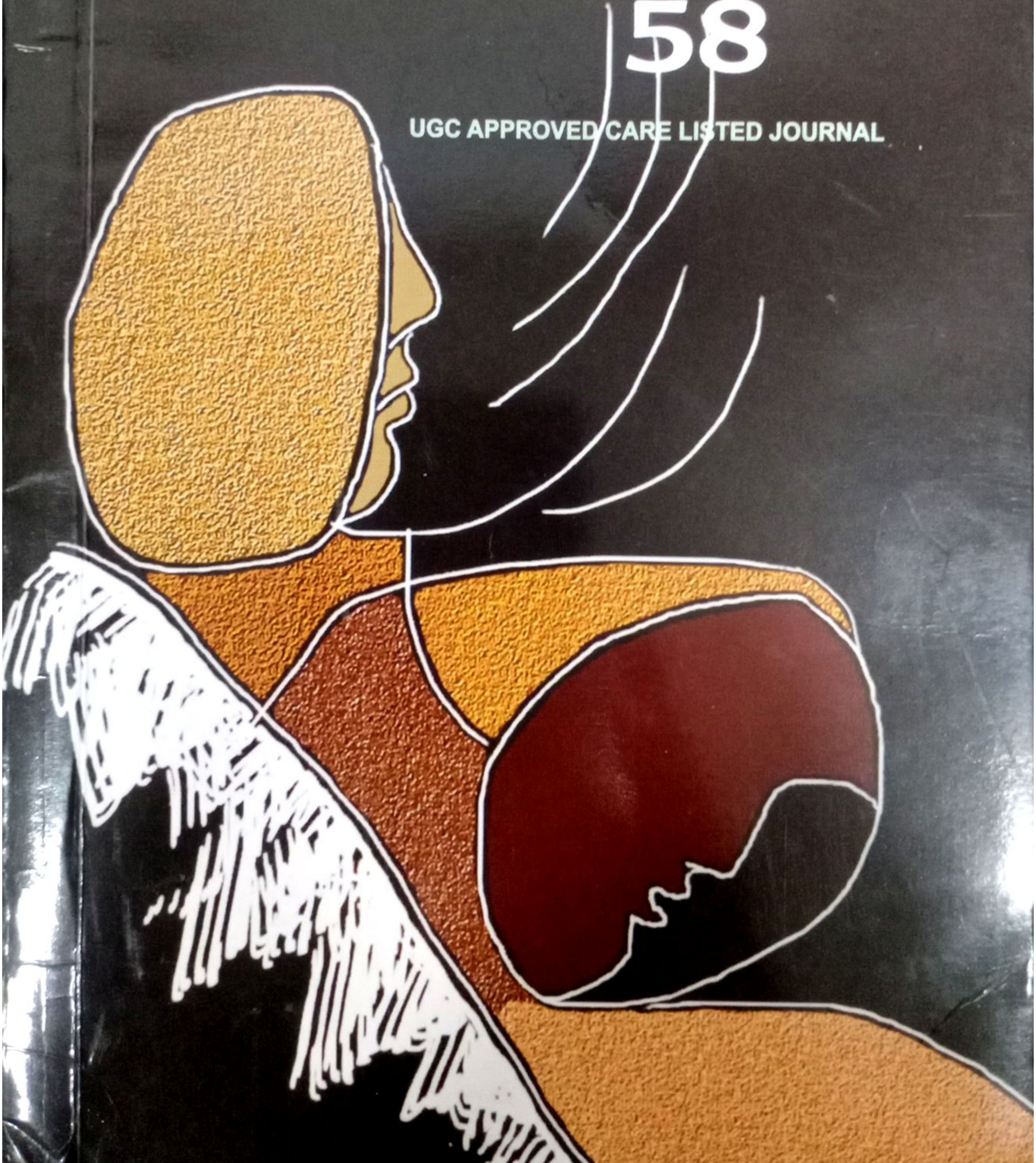

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 58 अप्रैल-जून 2022 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार
09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

डॉ॰ अब्दुल कलाम के दृष्टिपथ में 'अग्नि की उड़ान' :
साहित्य के विशेष संदर्भ में/ **रुचि कुमारी शर्मा** 130
डॉ॰ राजकुमार निजात के काव्य में सामाजिक यथार्थ/ **गुरप्रीत कौर** 136
'डरी हुई लड़की' उपन्यास में बदलते जीवनमूल्य/ **डॉ॰ मंजु पुरी** 142
योगरूढ़ तथा यौगिकरूढ़ पदों में भेद/ **डॉ॰ मधुबाला सिंह** 148
हिंदी के निर्गुण संतकवियों की जीवनदृष्टि के आधुनिक स्वर/ **पिंकी** 152
रामचरितमानस के मार्मिक स्थल/ **डॉ॰ महेश सिंह यादव** 157
मृदुला सिन्हा और मैत्रेयी पुष्पा के नारी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन/
डॉ॰ अन्नाराम शर्मा, श्रीमती शकीला 163
उचल्या : भारतीय दलित साहित्य की प्रतिनिधि आत्मकथा/
डॉ॰ गोरख प्रभाकर काकडे 168
विभाजन की त्रासदी व कितने पाकिस्तान/ **शिव कैलाश यादव** 175
काव्यभाषा के बारे में तुलसीदास की मान्यताएँ/ **डॉ॰ मुक्तिनाथ यादव** 180
खयालनामा कहानी-संग्रह में सामाजिक स्थिति/ **पुष्पा** 184
मुस्लिम पारिवारिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में शानी का साहित्य/
डॉ॰ आरिफ महात 188
ममता कालिया की कहानियों में नारी सशक्तिकरण/
रश्मि सिंह, डॉ॰ ललिता कुमारी 195
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में राम/
डॉ॰ रश्मि कुमारी, राहुल कुमार यादव 201
अलका सरावगी के उपन्यास में नारी-अस्मिता/
डॉ॰ श्रद्धा हिरकने, डॉ॰ अनुसुइया अग्रवाल 207
संस्कृत मुक्तक परंपरा में 'आळ्वन्दारस्तोत्ररत्नम्' स्तुतिपरक मुक्तक का
आलोचनात्मक अध्ययन/ **रमन शर्मा** 213
शरद जोशी के स्तंभ-लेखों में प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यंग्य/ **डॉ॰ राजकुमार** 220
प्रवासी हिंदी कविता में भारत-बोध/ **रूपेश कुमार** 226
मध्यकाल में स्त्री-जीवन के विभिन्न पक्ष/ **डॉ॰ मीना** 230
भीष्म साहनी के उपन्यासों में नारी-चेतना/
संजय कुमार दुबे, डॉ॰ श्रद्धा हिरकने 234
प्रवासी जीवन-संघर्ष और साहित्य/ **डॉ॰ मीना** 239
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का समसामयिक परंपरा विरोध/
डॉ॰ महेंद्रपाल सिंह 245
वृद्धजीवन की दर्दभरी दास्तान : रेहन पर रग्घू/ **महेश बापुराव चव्हाण** 248
ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य में सामाजिक व्यंग्य/
डॉ॰ गौकरण प्रसाद जायसवाल, दीपक कुमार 251

ISSN 0975-735X

मुस्लिम पारिवारिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में शानी का साहित्य

डॉ॰ आरिफ पठान
हिंदी विभाग प्रमुख,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

हिंदी के महत्त्वपूर्ण कथाकार के रूप में शानी को नकारा नहीं जा सकता लेकिन दुर्भाग्यवश यह कहना पड़ता है स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ी के इस कथाकार का उसकी काबिलियत के हिसाब से मूल्यांकन नहीं हो पाया। शानी के साहित्य में स्वतंत्रता के बाद के मुस्लिम समाज-जीवन का बखूबी चित्रण किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में मुस्लिम समाज-जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवालों में शानी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने मध्यवर्गीय भारतीय मुस्लिम-समाज की वास्तविकता से साहित्य-जगत को परिचित कराया और उनकी बुनियादी बातों को उछाला है। आपके साहित्य में देश के विभाजन की त्रासदी जिसका भारतीय मुस्लिम समुदाय पर पड़ा प्रभाव एवं भारतीय मुस्लिम समुदाय के पारिवारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के संघर्ष की वास्तविक तस्वीर देखने मिलती है।

पारिवारिक जीवन–परिवार का इंसान के जीवन में बड़ा महत्त्व रहता है। इंसान के अच्छे-बुरे संस्कारों का आधार उसके पारिवारिक जीवन पर ही ज्यादातर निर्भर रहता। व्यक्ति समाज का घटक बनने से पहले वह अपने परिवार के संपर्क में आता है। अत: उसके व्यक्तित्व के बनने में उसके परिवार की अहम भूमिका रहती है। साथ ही परिवार के सदस्यों के त्याग, प्रेम, उदारता, अपनापन, सेवा आदि के चलते पारिवारिक जीवन का ढाँचा मजबूत बनता है। शानी ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज जीवन में व्याप्त पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को बखूबी चित्रित किया है। उनका साहित्य पारिवारिक जीवन का भरा-पूरा संसार प्रस्तुत करता है। यहाँ हम मुस्लिम पारिवारिक जीवन को विवाह, दांपत्य जीवन एवं रिश्ते-नातों के परिप्रेक्ष्य में खोलने का प्रयास करते हैं।

विवाह–विवाह संस्कार एक ऐसी संस्था है जिसमें पारिवारिक जीवन की नींव रखी जाती है। ये नींव जितनी स्वस्थ होगी, पारिवारिक जीवन की इमारत उतनी ही भव्य एवं दिव्य होगी। हर समाज, धर्म में विवाह-संस्कार को पवित्र माना गया है। मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं है। शानी ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज में संपन्न होते विवाह का चित्रण किया है। 'काला जल' उपन्यास में फूफी के शादी के प्रसंग में मुस्लिम समुदाय व्याप्त रस्म-रिवाज का सुंदर चित्रण देखने मिलता है। दुल्हन दूल्हे के घर आते ही संदल की रस्म अदा जाती, 'दोनों दूल्हे-दुल्हन हथेलियों में जरा-जरा संदल लगाया जाता गया और रोशन फूफा ने छोटी फूफी का संदल वाला हाथ उठाकर, चौखट के ऊपर वाली दीवार पर ऐसे धर दिया कि वहाँ निशान रह जाए।'[1] रस्म पूरी होने के बाद मुहल्ले-पड़ोस की औरतें नेग के लिए रज्जू मियाँ का रास्ता रोक देती है। रज्जू मियाँ की बहाने-बाजी पर एक पड़ोसन कहती, 'अरे, जब बेटे की शादी करने

ISSN 0975-735X

मुस्लिम पारिवारिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में शानी का साहित्य

डॉ॰ आरिफ महात
हिंदी विभाग प्रमुख,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

हिंदी के महत्त्वपूर्ण कथाकार के रूप में शानी को नकारा नहीं जा सकता लेकिन दुर्भाग्यवश यह कहना पड़ता है स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ी के इस कथाकार का उसकी काबिलियत के हिसाब से मूल्यांकन नहीं हो पाया। शानी के साहित्य में स्वतंत्रता के बाद के मुस्लिम समाज-जीवन का बखूबी चित्रण किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में मुस्लिम समाज-जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवालों में शानी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने मध्यवर्गीय भारतीय मुस्लिम-समाज की वास्तविकता से साहित्य-जगत को परिचित कराया और उनकी बुनियादी बातों को उछाला है। आपके साहित्य में देश के विभाजन की त्रासदी जिसका भारतीय मुस्लिम समुदाय पर पड़ा प्रभाव एवं भारतीय मुस्लिम समुदाय के पारिवारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के संघर्ष की वास्तविक तस्वीर देखने मिलती है।

पारिवारिक जीवन—परिवार का इंसान के जीवन में बड़ा महत्त्व रहता है। इंसान के अच्छे-बुरे संस्कारों का आधार उसके पारिवारिक जीवन पर ही ज्यादातर निर्भर रहता। व्यक्ति समाज का घटक बनने से पहले वह अपने परिवार के संपर्क में आता है। अत: उसके व्यक्तित्व के बनने में उसके परिवार की अहम भूमिका रहती है। साथ ही परिवार के सदस्यों के त्याग, प्रेम, उदारता, अपनापन, सेवा आदि के चलते पारिवारिक जीवन का ढाँचा मजबूत बनता है। शानी ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज जीवन में व्याप्त पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को बखूबी चित्रित किया है। उनका साहित्य पारिवारिक जीवन का भरा-पूरा संसार प्रस्तुत करता है। यहाँ हम मुस्लिम पारिवारिक जीवन को विवाह, दांपत्य जीवन एवं रिश्ते-नातों के परिप्रेक्ष्य में खोलने का प्रयास करते हैं।

विवाह—विवाह संस्कार एक ऐसी संस्था है जिसमें पारिवारिक जीवन की नींव रखी जाती है। ये नींव जितनी स्वस्थ होगी, पारिवारिक जीवन की इमारत उतनी ही भव्य एवं दिव्य होगी। हर समाज, धर्म में विवाह-संस्कार को पवित्र माना गया है। मुस्लिम समाज भी इससे अछूता नहीं है। शानी ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज में संपन्न होते विवाह का चित्रण किया है। 'काला जल' उपन्यास में फूफी के शादी के प्रसंग में मुस्लिम समुदाय व्याप्त रस्म-रिवाज का सुंदर चित्रण देखने मिलता है। दुल्हन दूल्हे के घर आते ही संदल की रस्म अदा जाती, 'दोनों दूल्हे-दुल्हन हथेलियों में जरा-जरा संदल लगाया जाता गया और रोशन फूफा ने छोटी फूफी का संदल वाला हाथ उठाकर, चौखट के ऊपर वाली दीवार पर ऐसे धर दिया कि वहाँ निशान रह जाए।"[1] रस्म पूरी होने के बाद मुहल्ले-पड़ोस की औरतें नेग के लिए रज्जू मियाँ का रास्ता रोक देती है। रज्जू मियाँ की बहाने-बाजी पर एक पड़ोसन कहती, 'अरे, जब बेटे की शादी करने

 ISSN 0975-735X

निकले हो और घर में बहू आ रही है तो उतना बड़ा कलेजा रखो। जैसे-तैसे रज्जू मियाँ के हाथ से आठ आने छूटे, व्यंग्य और हँसी के बाद वह एक रुपया हुआ और अंत में पड़ोसी बिना उसे स्वीकार किए यूँ ही राह छोड़कर हटने लगे तो उनकी नाराजगी के भय से, शरमाशरमी दो रुपए दिए गए।"[2] इस तरह शादी प्रचलित हास-परिहास का चित्रण जीवंतता के साथ उपन्यास में परिलक्षित होता है।

मुस्लिम समाज में संपन्न होते विवाह में व्याप्त प्रथाओं को शानी ने साहित्य में चित्रित किया है। इन प्रथाओं के कारण समाज एवं परिवार पर पड़ते प्रभावों का वास्तविक चित्रण उनके साहित्य में देखने मिलता है। मुस्लिम समाज में शरीअत के नाम पर 'बहुविवाह' की प्रथा प्रचलित हो चुकी है। समाज के लोग अपने स्वार्थ के लिए अक्सर शरीअत का हवाला देते नजर आते हैं। इस्लाम में शरीअत के अनुसार पुरुष को चार विवाह करने की अनुमति है लेकिन इसके अपने कानूनी नियम हैं, जिसे निभाना हर एक का कर्त्तव्य है। इस्लाम में बहुविवाह की मान्यता के पीछे ऐतिहासिक पार्श्वभूमि है जिसके तहत इस्लाम के उदय से पूर्व अरब में स्त्रियों की स्थिति बड़ी दयनीय थी। उसे समाज में कोई स्थान नहीं था। उनका क्रय-विक्रय भेड़-बकरियों की तरह किया जाता था। एक पुरुष बिना किसी झिझक के एक साथ अपने हरम में अनेक स्त्रियाँ रखता था।

इस्लाम के उदय से पूर्व पुरुष को चाहे जितने भी विवाह करने का अधिकार प्राप्त था, उस पर इस्लाम में अंकुश लगाया गया। इस्लाम के उदय के बाद पहले की स्थितियों में सुधार आया और शरीअत (कानून) के अनुसार एक पुरुष को विशेष परिस्थितियों में चार विवाह करने की अनुमति दे दी गई। लेकिन इस पर तंबीह के तौर पर कुरआन में स्पष्ट कहा गया है कि 'अगर तुम्हें डर हो कि यतीम लड़कियों से शादी करके तुम इंसाफ न कर सकोगे तो और औरतों में जो तुम्हें अच्छी लगे तुम उनसे शादी कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, लेकिन अदल न रखने का डर है तो एक ही काफी है।'[3] इससे स्पष्ट होता है कि एक ही औरत से शादी करने में भलाई है, क्योंकि एक से ज्यादा औरतों से शादी करने पर सभी के साथ इंसाफ करना मुश्किल होगा। दिली मुहब्बत के तहत किसी एक की ओर झुकाव ज्यादा होने से अपने बीवियों में इंसाफ करने से चूक जाएगा। परिणामस्वरूप अल्लाह के यहाँ गुनहगार होगा। कुरआन में स्पष्टता से कहा गया है कि तुम बीवियों में इंसाफ न कर सकोगे, अतः एक ही पर बस करो। फिर भी इस्लाम में बहु-विवाह के मान्यता संबंधी तरह-तरह की अटकलें लगाई जाती हैं।

शानी ने अपने साहित्य द्वारा बहुविवाह के कारण पारिवारिक जीवन में होते बदलाव एवं घुटन को सजीव रूप में अंकित किया है। 'काला जल' उपन्यास में बी-दारोगिन अपने पति मिर्जा की घर के चिराग के खातिर दूसरी शादी बिलासपुर वाली से करवाती है। लेकिन जिस गर्मजोशी से वह बिलासपुर वाली को ब्याह लाती है, उसके घर आते ही उसके साथ सौतेला व्यवहार करने लगती है। उसे मिर्जा के पास ज्यादा फटकने नहीं देती। मिर्जा के साथ उसे अकेला देखती तो किसी-न-किसी बहाने से उसे मिर्जा से अलग करवाती है। वह हर वक्त काम में मश्गूल रहे इसलिए घर के सारे काम उससे करवा लेती है। फिर भी भुले बिसरे वह कभी मिर्जा के साथ अकेली पाई जाती तो बी-आपा उसे ताने देती रहती, 'फुर्सत मिल गई, महारानी जी? इतनी जल्दी क्यों निकल आई? थोड़ी देर और लाड़-चोंचले कर लेतीं।'[4] इतने पर न रुक आगे कहती, 'और ये आँखें किसे दिखाती है? छिनाल, हरामजादी, कामचोर निवाला हाजिर'[5] इस तरह घर का माहौल हर दिन किसी-न-किसी कारण तंग रहता, जिसे देख मिर्जा उकता जाते। एक दिन बी- दोरागिन

ISSN 0975-735X

को चिल्लाते देख मिर्जा गुस्साते हैं, 'अरे चोप्प... हर बात की हद होती है। जब देखता हूँ, उसी के पीछे लगी है। उसका रहना मुश्किल कर दिया है। जलन से ऐसी ही मरी जा रही थी तो दूसरी शादी क्यों करवाई? मैं भी कमबख्त इसके चक्कर में आकर एक अच्छी-खासी लड़की की जिंदगी से खेल बैठा।'[6] इस प्रसंग से स्पष्ट हो जाता है कि बहुविवाह वाले घर से सुख-चैन पूरी तरह चला जाता है। परिवार बिखरता है। बहुविवाह करनेवाला व्यक्ति किसी-न-किसी के जीवन से खेल जाता है जिसका एहसास उसे वक्त के गुजरने के बाद होता है। शानी ने उपन्यास में मिर्जा, बी-दारोगिन और बिलासपुर वाली के प्रसंग को बड़ी जीवंतता के साथ चित्रित किया है। ऐसी स्थिति में दूसरी बीवी की होनेवाली मानसिक कचोट को शानी ने बिलासपुर वाली द्वारा बखूबी दिखाने का प्रयास किया है।

बहुविवाह के कारण दूसरी पत्नी और बच्चे की होती दुर्गति का चित्रण 'रहीम चाचा' कहानी में देखने मिलता है। रहीम के पिता की किराने की दुकान थी। दुकान से मुनाफा होता गया और वे अमीर हो गए। अमीर होते ही पहली पत्नी और बच्चों के होते हुए उन्होंने रहीम के माँ से शादी कर ली। जब तक ये जिंदा थे रहीम और उसकी माँ की जिंदगी मजे से कटी। 'रहीम मुश्किल से दस के रहे होंगे कि उनके पिता उनकी माँ, सौतेली माँ और सौतेले बहन-भाई छोड़कर चल बसे। उनके चालीसवें के बाद रहीम के सौतेले बड़े भाई ने सारी जायदाद, जिसमें मकान-दुकान सभी थे, अपना अधिकार कर रहीम और उसकी माँ को अलग कर दिया। रहीम की माँ ने बहुत हाथ-पाँव मारे, पर कुछ हुआ नहीं।'[7] अतः जिंदगीभर रहीम और उसकी माँ अभावों में जिंदगी गुजारते रहे। घर, जायदाद सब से बेदखल होकर लाचार जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर हो गए। इस तरह कह सकते हैं कि शरीअत के अनुसार भले ही पुरुष एकाधिक विवाह कर सकता है पर वास्तव में वह सबके साथ न्याय नहीं कर पाता और अंत में परिवार बँट जाता है।

शानी ने अपनी कुछ कहानियों में अनमेल विवाह की दुर्गति को भी चित्रित किया है। 'छल' कहानी में राशिद भाई चालीस पार होने के बाद शादी करते हैं। गरीबी, असमर्थता और उनके स्वभाव के चलते उनका ब्याह फलता नहीं। ब्याह के पाँच वर्ष बाद तक दो बच्चों के बाप बने राशिद भाई वक्त से पहले ही बुढ़ापे को पा जाते हैं। घर में अकसर बीवी के साथ झगड़े से राशिद भाई को इंसान से जानवर बनते देर नहीं लगती। रोज घर-मुहल्ले में तमाशा चलता रहता है। दोनों एक-दूसरे के खानदान की बखिया उधेड़ देते हैं। मार-पीट छीना-झपटी करते हैं। एक-दूसरे को फूहड़ गालियाँ बकते हैं और अपने जीवन को जहन्नुम बना लेते हैं। अनमेल विवाह के चलते ही 'गुलमोहर का पेड़' कहानी में साहिरा के जीवन की त्रासदी देखने मिलती है। अठारह बरस की कुँआरी साहिरा चालीस पार इसरार भाई की दूसरी पत्नी बन जाती है। साहिरा के जीवन का चित्रण कहानी में लेखक इस प्रकार करते हैं–'सचमुच, साहिरा की जिंदगी में सिर्फ ढेर सारे कोरे और सफेद पन्ने रह गए हैं, जिन्हें एक बार उलट देना भर काफी है। जैसे कोई नया-नया स्कूल में दाखिल होकर नई काफी खरीदे और एक-दो सफे लिखे कि स्कूल ही छूट जाए।'[8] इस कथन से स्पष्ट होता है कि अनमेल विवाह के कारण स्त्री-जीवन के दुःख की कोई सीमा नहीं रहती। कहना गलत न होगा कि शानी ने मुस्लिम समुदाय में प्रचलित विवाह संस्कार का यथार्थ चित्रण किया है।

दांपत्य जीवन–पारिवारिक जीवन में दांपत्य संबंध को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। असल में सभी संबंधों का निर्माण इसी संबंध के माध्यम से होता है। मुस्लिम समाज में दांपत्य संबंध को

ISSN 0975-735X

बड़ी गरिमा प्रदान की गई है। पति-पत्नी को एक-दूसरे का आधार माना गया है। कुरआन में एक जगह फरमाया है कि 'वह (अल्लाह) ऐसा है कि जिसने तुम्हें सिर्फ एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि वह अपने जोड़े से सुकून हासिल करे।'[9] और फिर एक और जगह पति-पत्नी के रिश्ते को अलग ढंग से समझाया है-'वह तुम्हारा लिबास है और तुम उनके लिबास हो।'[10] इससे स्पष्ट होता है कि इस्लाम में दांपत्य रिश्ते का बड़ा महत्त्व है क्योंकि यही वह रिश्ता है जिससे इंसान सुकून (आनंद) प्राप्त कर सकता है। जिस तरह लिबास इंसानी जिस्म की हर खराब माहौल और असर से सुरक्षा करता है उसी तरह हर बुरी चीजों से पति-पत्नी भी एक-दूसरे के लिए सुरक्षा कवच हैं।

शानी ने साहित्य में मुस्लिम जीवन की बारीकियों को बखूबी चित्रित किया है, जिसमें प्रमुख रूप से दांपत्य जीवन भी आता है। उनके साहित्य में दांपत्य जीवन में पनपते प्यार, अपनापन, झगड़ा, तकरार, अजनबीपन आदि अनेक रूप देखने मिलते हैं। 'काला जल' उपन्यास में लेखक ने मिर्जा और बी-दारोगिन के दांपत्य जीवन के मधुर पलों को मार्मिकता से चित्रित किया है, लेकिन जैसे ही मिर्जा की बिलासपुर वाली से दूसरी शादी हो जाती है तब इन दोनों के रिश्तों में खटास आ जाता है। पति-पत्नी के रिश्ते में किसी तीसरे के आ जाने से इनके बीच बदलते व्यवहार में आनेवाले बदलाव को शानी ने 'काला जल' में बबन के अम्मी-अब्बा के माध्यम से चित्रित किया है। जो पत्नी अपने पति की लंबी उमर के लिए दुआ माँगते नहीं थकती, वही उसकी गलत करतूतों पर बद्दुआ देने से भी नहीं कतराती। बबन के अब्बा दूसरी औरत के चक्कर में फँसकर अपने घर को बरबाद करने पर तुल जाते हैं। अम्मी के समझाने पर भी नहीं मानते बल्कि उसे ही खरी-खोटी सुनाकर घर से निकालते हैं। तब उसके मन से बद्दुआ निकलती है, 'अरे, तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। खुदा कभी भला नहीं करेगा। देखना, यही उलट जवानी कोढ़ रोग बन फूटेगी और तुम्हें कोई कुत्ता भी नहीं पूछेगा।'[11] इस कथन से स्पष्ट होता है कि दांपत्य जीवन में पनपती मधुरता विपरीत परिस्थितियों में जहर बनने से भी नहीं कतराती।

'बीच के लोग' कहानी में शानी ने पति-पत्नी में उत्पन्न हमेशा झगड़ों से उनके रिश्ते को जोड़नेवाले नाजुक धागे में बनती ढेर-सी गठानों को दर्शाया है। इस गठानों को पाटते-पाटते शम्मी आपा वकील साहब के रिश्ते की मिठास खत्म हो जाती है। वकील साहब पाकिस्तान चले जाते हैं और इसी तकरार के तहत शम्मी आपा हिंदुस्थान में रह सुहागन बेवा का जीवन ढोने के लिए मजबूर हो जाती है। पति-पत्नी के रिश्ते में पनपते कड़वाहट का जीवंत चित्रण 'रहीम चाचा' कहानी में देखने मिलता है। रहीम चाचा और सकीना के बीच हरदम झगड़ा होता रहता है। घर का माहौल हमेशा तंग रहता है जो रिश्ता सुकून को पाने का आधार होता है वही रहीम चाचा के जीवन से सुकून को दूर करने का कारण बन जाता है।

पति-पत्नी एक-दूसरे का सबसे बड़ा आधार होते हैं। इसका चित्रण 'नंगे' कहानी में हुआ है। कठिन हालात में रूबीना अपने पति का हरदम साथ और प्यार देते नजर आती है, जिसके कारण घोर आर्थिक कठिनाइयों में भी इनके रिश्ते की मिठास बरकरार रहती है। रूबीना के माध्यम से लेखक ने समर्पिता पत्नी का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है, जो हर हालत में अपने पति, बच्चे, परिवार और सगे-संबंधियों को एक सूत्र में बाँधे रखने में सफल होती है, जो किसी भी रिश्ते को बिखरने नहीं देती।

शानी ने अपने साहित्य में मुस्लिम जीवन को प्रस्तुत किया है। आर्थिक अभाव में जी रहे

दांपत्य जीवन का सजीव चित्रण इनके साहित्य में देखने मिलता है। आर्थिक अभाव के कारण पति-पत्नी की होनेवाली मानसिक कचोट अनेक कहानियों में देखने मिलती है, जिनमें 'रहीम चाचा', 'नंगे', 'एक मकान का घर', 'आईना', 'जली हुई रस्सी' आदि प्रमुख हैं। 'जली हुई रस्सी' में आर्थिक अभाव के कारण वाहिद और सफिया के रिश्ते में पनपती कसमसाहट साफ तौर पर देखने मिलती है। पति-पत्नी अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को एक-दूसरे के सामने पेश करने से भी संकोच करते हैं। सफिया एक दिन झिझकते हुए वाहिद से कहती है, 'एक बात कहूँ आपसे?' जवाब देने से पहले ही वाहिद डर जाता है कि पता नहीं क्या कौनसी बात कहेगी। पूछने पर सफिया कहती है, 'प्राविडेंट फंड के पैसे मिलेंगे, तो घी ला दोगे? बहुत दिनों से अपने यहाँ पुलाव नहीं बना। वाहिद के भीतर जैसे किसी ने हाथ डालकर खँगाल दिया हो। अपने को किसी तरह संयत कर पहले वह धीरे से मुस्कुराया, फिर जरा जोर से बनाई हुई हँसी हँसता हुआ बोला बस?'[12] यहाँ लेखक ने पत्नी के छोटी सी ख्वाहिश को पूरा न कर पानेवाले पति के मानसिक तनाव को बखूबी उड़ेल दिया है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि शानी ने अपने साहित्य में दांपत्य संबंधों के विविध पहलुओं को वास्तविकता के साथ चित्रित किया है, जिसमें कहीं भी नाटकीयता नहीं है।

रिश्ते-नाते—मानव जीवन में रिश्तों का अपना एक अलग स्थान एवं महत्त्व है। बिना अपनों के इंसान एकांगी है और वह रह भी नहीं पाता। इंसान के अपने, उसके रिश्ते विविध रूप में पाए जाते हैं। शानी के साहित्य संसार में भी रिश्तों के विविध रूप दिखाई देते हैं, जिसमें आत्मीयता और प्यार है; तो कहीं टकराव, दरार और अजनबीपन है। इन सबका शानी ने बखूबी चित्रण किया है।

'काला जल' उपन्यास में रिश्तों की जमघट-सी नजर आती है, जिसमें लेखक ने बब्बन और फूफी के परिवार के माध्यम से मानवीय रिश्तों की श्रृंखला प्रस्तुत की है। इसमें लेखक ने हर रिश्ते की वास्तविकता को बखूबी चित्रित किया है। फिर चाहे वो रज्जू मियाँ और फूफी का सास-ससुर का रिश्ता हो, बी-दारोगिन और बिलासपुर वाली का सौतन का रिश्ता हो, बब्बन और मोहसिन का भाई का रिश्ता हो, त्रिवेदी काका और बब्बन के पिता का दोस्ती का रिश्ता हो, या फिर बब्बन और सल्लो आपा का मधुरता से युक्त भावपूर्ण रिश्ता हो, सभी रिश्तों के पहलुओं को शानी ने सच्चाई एवं ईमानदारी के साथ मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है, जो कहीं भी कृत्रिम और गढ़ा हुआ महसूस नहीं होता।

ऐतबार और अपनेपन में रिश्ता मजबूत बनता है। जब रिश्तों में खटास आ जाती है तब वह रिश्ता बोझ बन जाता है। रिश्ते की इस कशमकश को शानी ने अपनी कहानी 'डाली नहीं फूलती' में बड़े ही मार्मिकता से व्यक्त किया है। सबीहा के पिता के मरने के बाद वह अपनी बड़ी बहन बाजी और युनूस भाईजान के पास रहने आती है। एक दिन बाजी युनूस को सबीहा के साथ दिल्लगी करते हुए देखती है। उस दिन से वह सबीहा से खफा रहने लगती है। उससे ज्यादा बात नहीं करती। हर बात में उसकी कमियाँ निकालने लगती है। लोगों के सामने उसे दुत्कारते हुए, उसके बदबख्ती का बयान करने लगती है। यह सब देख सबीहा भी अंदर-ही-अंदर बौखला उठती है। बाजी और सबीहा के रिश्ते में पड़े इस दरार को लेखक ने बड़े ही संजीदगी के साथ प्रस्तुत करते हुए कहा है, 'शायद सबीहा और बाजी को बाँधनेवाली डोर कमल के नाल जैसी थी जो टूटने के बावजूद भी अपने सिरों से निकले चंद बारीक और नाजुक रेशों से जुड़ी हुई होती

ISSN 0975-735X

है।"[13] यहाँ लेखक ने उनके रिश्तों के बीच मिटती मिठास को व्यक्त करते हुए यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि भले इनके रिश्तों में कड़वाहट पनप रही है, फिर भी वे एक-दूसरे के साथ रहने और एक-दूसरे को सहने के लिए मजबूर हैं।

'नंगे' कहानी में शानी ने 'दूल्हे भाई' जैसे रिश्तेदार को प्रस्तुत किया है जिसे घर में कोई रखना नहीं चाहता फिर भी रख लेता है। जैसे-जैसे वक्त गुजरता है वह घर का हिस्सा बन जाता है। कहानी का वाचक कहता है, 'यह दूल्हे भाई अब हमारे कोई नहीं फिर भी कैसे इतने अपने-से बन गए हैं कि उन्हें हटाकर कुछ सोचा ही नहीं जा सकता। कई बरस हुए मेरी एक बदनसीब आपा के पल्लू से बँधकर रिश्तेदार बने थे, पर बीच में ही आपा क्षय से उठ गईं। रिश्ता टूटा। उनका दूसरा ब्याह हुआ लेकिन बीमारी और अभाग्य से उनकी नौकरी भी जाती रही और दूसरी बीवी अपने बच्चे को लेकर पिछले दो बरस से मायके जा बैठी है। इधर तभी से दूल्हे भाई ने पुराने रिश्ते को नया कर लिया है; हालाँकि अम्मी को उनका रहना कभी पसंद नहीं आया। जब बेटी ही नहीं रही तो दामाद से क्या रिश्ता?'[14] इस प्रकार शानी की कहानियों में रिश्तों की अजीब कहानियाँ देखने मिलती हैं।

'जनाने का फूल' कहानी में भाभी और देवर के रिश्ते की मिठास देखने मिलती है। असलम रिश्ते में आयशा का देवर लगता है लेकिन उनका रिश्ता कुछ-कुछ दोस्ती जैसा बन जाता है। आयशा असलम को अपने गुजरे कल की बातें बताती है। शानी ने इस रिश्ते का अंकन बखूबी किया जिसमें मिठास और अपनेपन के साथ तकरार और रूठना मनाना भी नजर आता है। 'दोजखी' कहानी में वाचक और हसीन का दोस्ताना नजर आता है जिसमें अपनापन एवं प्यार तो है लेकिन ज्यादातर दोनों में नोक-झोंक ही नजर आती है।

शानी ने अपने साहित्य में रिश्तों के विविध पहलुओं को बखूबी चित्रित किया है। रिश्ते-नातों की हर कोने से चिकित्सा की है। उनमें पनपते प्यार, अपनापन, तकरार, नोक-झोंक आदि का मार्मिक चित्रण किया है। इसके उपरांत ऐसा महसूस होता है कि 'रिश्तों' में अलगाव शानी को पसंद नहीं। इसी कारण तो वह अपने साहित्य में रिश्तों में पनपती खटास, उसमें पड़ी दरारों को तो बेबाकी से चित्रित करते हैं लेकिन उन्हें टूटते हुए नहीं दिखा पाते। आखिर में उलझे हुए रिश्तों में कोई-न-कोई ऐसी सिरों को जरूर दिखाते हैं जो उसे जोड़े रखती है। पूरी तरह से अलग नहीं होने देती बिल्कुल कमल की नाल की तरह जिसके टूटने के बाद भी उसके कई सिरे एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। अतः कह सकते हैं कि शानी के साहित्य में पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

संदर्भ

1. शानी, काला जल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 2008 ई॰, पृ॰ 73
2. वही, पृ॰73
3. कुरआन सुरह-निसा, आयत-3
4. शानी, काला जल, पृ॰ 27
5. वही, पृ॰ 27
6. वही, पृ॰ 28
7. शानी, सब एक जगह (दूसरी जिल्द), रहीम चाचा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982 ई॰) पृ॰ 298